जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – अगस्त 2025 ।। अंक – 61 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

समूह का मिला साथ
तो मजबूत हुआ हाथ
(पृष्ठ – 02)

घर की रसोई से
देशभर में बनाई पहचान
(पृष्ठ – 03)

समूह से जुड़कर बदली
गुड्डी कुमारी की ज़िन्दगी
(पृष्ठ – 04)

नई आशा और प्रेरणा का प्रतीक : जीविका स्वयं सहायता समूह

बिहार, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के साथ–साथ आर्थिक और सामाजिक समरसता के लिए भी जाना जाता है। आज जीविका परियोजना के माध्यम से ग्रामीण समुदाय एक नई दिशा में अग्रसर हैं। बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति ने स्वयं सहायता समूह के माध्यम से बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव लाने का काम किया है। यह परियोजना न केवल ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बना रही है, बल्कि सामाजिक समावेशन, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण जैसे क्षेत्रों में भी जागरूक कर रही है।

स्वयं सहायता समूह : आत्मनिर्भरता की नींव

जीविका परियोजना की रीढ़ स्वयं सहायता समूह हैं, जो ग्रामीण महिलाओं को एकजुट करके उन्हें आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाने का कार्य करते हैं। ये समूह छोटी बचत और सूक्ष्म ऋण की अवधारणा पर आधारित हैं, जहाँ महिलाएँ नियमित रूप से छोटी–छोटी राशि बचत करती हैं और जरूरत पड़ने पर कम ब्याज दरों पर ऋण लेती हैं। इससे उनकी वित्तीय स्वतंत्रता बढ़ी है। उन्हें स्थानीय बैंकों और वित्तीय संस्थानों से भी जोड़ा गया है। आज बिहार में लाखों महिलाएँ, जिन्हें 'जीविका दीदी' के नाम से जाना जाता है, इन समूहों के माध्यम से अपनी जिंदगी को नई दिशा दे रही हैं।

आर्थिक सशक्तीकरण और उद्यमिता

जीविका ने ग्रामीण महिलाओं को उद्यमिता की दुनिया में कदम रखने का अवसर प्रदान किया है। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाएँ किराना दुकानें, सिलाई केंद्र, पशुपालन, मुर्गी पालन और जैविक खेती जैसे छोटे–छोटे व्यवसाय संचालन कर रही हैं। उदाहरण के लिए, जीविका दीदियों ने 'दीदी की रसोई' जैसी पहल शुरू की है, जो स्कूलों और सरकारी कार्यालयों में पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराती है। इसके अलावा, उद्यम संचालन, उत्पादक कंपनी संचालन, वर्मी कम्पोस्ट और जैविक खेती को बढ़ावा देकर ये दीदियाँ न केवल आय के स्रोत बढ़ा रही हैं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान दे रही हैं।

सामाजिक बदलाव का माध्यम

जीविका परियोजना का प्रभाव केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। स्वयं सहायता समूहों ने ग्रामीण समाज में सामाजिक बदलाव की नींव रखी है। ये समूह महिलाओं को सामाजिक मुद्दों जैसे बाल विवाह, दहेज प्रथा, और लैंगिक असमानता के खिलाफ जागरूक करने का भी कार्य करते है। जीविका दीदियाँ अपने समुदायों के बीच जागरूकता अभियान चलाती हैं, जिससे शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति लोगों का दृष्टिकोण बदल रहा है। इसके अलावा, जीविका ने सामुदायिक पुस्तकालयों और कैरियर विकास केंद्रों की स्थापना की है, जो युवाओं को शिक्षा और रोजगार के अवसर प्रदान कर रहे है।

भविष्य की संभावनाएँ

जीविका परियोजना सरकारी और एवं अन्य सेवा प्रदाता संगठनों के सहयोग से जीविकोपार्जन के विभिन्न आयामों के विकास हेतु कार्य कर रही है। बिहार के हर गाँव तक कार्य किया जा रहा है, ताकि प्रत्येक ग्रामीण महिला आत्मनिर्भर बन सके। इसके अलावा, जीविका दीदियों के उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों से जोड़ने की योजनाएँ पर भी कार्य किया जा रहा है, जिससे उनके उत्पादों को व्यापक पहचान मिल सके।

जीविका परियोजना ने बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से एक क्रांतिकारी बदलाव लाया है। यह न केवल आर्थिक विकास का प्रतीक है, बल्कि सामाजिक समावेशन और लैंगिक समानता का भी एक मजबूत आधार बन कर उभर रहा है। जीविका दीदियों की मेहनत और समर्पण ने साबित कर दिया है कि सही दिशा और संसाधनों के साथ, ग्रामीण भारत न केवल आत्मनिर्भर बन सकता है, बल्कि देश के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। जीविका स्वयं सहायता समूह, वास्तव में, बिहार की नई आशा और प्रेरणा का प्रतीक है

एक साधारण महिला की असाधारण उड़ान

पश्चिम चंपारण जिले के सिधाव प्रखंड स्थित संतपुर सोहरिया पंचायत के कंगुसरी गाँव की गौतमी देवी कभी सीमित संसाधनों में अपने परिवार का जीवन–यापन करती थीं। जीवन में कई जिम्मेदारियों एवं कठिनाइयों से भी हार नहीं मानी। जीविका से जुड़ाव के बाद उन्हें प्रशिक्षण और सहयोग मिला, जिसने उनकी जिंदगी को एक नई दिशा दी। वर्ष 2023 में उन्होंने साबुन निर्माण का प्रशिक्षण प्राप्त किया और माँ विन्ध्वासिनी जीविका स्वयं सहायता समूह से ऋण लेकर घरेलू स्तर पर साबुन निर्माण की शुरुआत की।

गौतमी दीदी के लिए यह क्षेत्र बिल्कुल नया था। तकनीकी जानकारी के अभाव में शुरुआत करना कठिन था, लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। जीविका से मिले प्रशिक्षण में उन्हें साबुन निर्माण, गुणवत्ता नियंत्रण, ब्रांडिंग और विपणन की बारीकियों की जानकारी मिली। उन्होंने अपने उत्पाद की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि बाजार में उनके साबुन की मांग तेजी से बढ़ने लगी।

गौतमी ने समझा कि सामूहिक प्रयास से ही स्थायी सफलता संभव है। उन्होंने समूह की अन्य महिलाओं को भी इस काम में जोड़ा। इससे न केवल उत्पादन बढ़ा, बल्कि स्थानीय महिलाओं को भी रोजगार मिला। अब यह केवल एक व्यक्तिगत उद्यम नहीं रहा, बल्कि सामूहिक आजीविका का माध्यम बन गया।

स्थानीय बाजार के साथ–साथ उन्होंने अपने उत्पाद को ऑनलाइन माध्यमों से बेचने की योजना बनाई और दूसरे शहरों में भी पहचान बनाई। आज गौतमी देवी हर महीने 30,000 रुपये से अधिक की आय अर्जित कर रही हैं। वह आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और अपने परिवार को बेहतर जीवन देने में सक्षम हैं। गौतमी देवी आज ग्रामीण महिला उद्यमिता की मिसाल हैं और बदलाव की प्रेरणा स्रोत हैं।

समूह का मिला साथ तो मजबूत हुआ हाथ

बांका जिले के रजौन प्रखंड स्थित राजबर पंचायत की रहने वाली सविता कुमारी आज जीविका के सहयोग से सफल उद्यमी बन चुकी हैं। वह लक्ष्मी मय्या जीविका स्वयं सहायता समूह से भी जुड़ी हुई हैं।

सविता कुमारी की जीवन कहानी साहस और आत्मनिर्भरता की मिसाल है। वर्ष 2020 में वह एक गंभीर बीमारी से जूझ रही थीं, आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण इलाज संभव नहीं हो पा रहा था। जब उन्होंने कर्ज लेने की कोशिश की, तब उन्हें जमीन गिरवी रखने एवं अत्यधिक ब्याज दर का बोझ झेलने की बात आयी। हताश सविता को इस दु :ख से उभरने का रास्ता दिखाया गांव की ललिता देवी ने, जो लक्ष्मी मय्या जीविका समूह की अध्यक्ष थीं।

ललिता देवी की सलाह पर सविता जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं और नियमित बैठकों व बचत में हिस्सा लेने लगीं। उन्होंने समूह से पहली बार 10,000 रुपये का ऋण लेकर अपना इलाज कराया, जिससे उनका समूह पर भरोसा बढ़ा।

इसके बाद उन्होंने अपने पति के वसुधा केंद्र को गांव से स्थानीय बाजार में शिफ्ट करने के लिए 50,000 रुपये का ऋण लिया। इससे उनकी आय में सुधार हुआ और घर की आर्थिक स्थिति भी धीरे–धीरे सुधरने लगी।

वर्ष 2023 में जीविका की ओर से कृषि उद्यमी के रूप में महिलाओं का चयन किया गया, जिसमें सविता दीदी का कार्यशैली देखते हुए उन्हें भी चयनित किया गया। पटना में 21 दिनों का आवासीय प्रशिक्षण प्राप्त कर उन्होंने खाद–बीज की दुकान शुरू की। इस केंद्र से वह किसानों को तकनिकी सहयोग के साथ–साथ खाद–बीज मुहैया करा रही है। इससे अब वह हर माह करीब 20,000 रुपये की आमदनी कर रही हैं और गांव में कृषि उद्यमी दीदी के रूप में अपनी पहचान बनायी है।

सविता कहती हैं – 'अगर समय पर जीविका समूह से मदद न मिलती, तो मैं अपना इलाज नहीं करवा पाती। आज मैं आत्मनिर्भर हूँ और किसानों की सेवा भी कर रही हूं।' उनकी यह यात्रा कई महिलाओं के लिए प्रेरणादायक है।

घर की रसोई से देशभर में बनाई पहचान

दरभंगा जिले के बिरौल प्रखंड के रूपनगर गांव की रहने वाली अनीता देवी कभी एक साधारण गृहिणी थीं। उनके पति हरी नारायण लाल दास की प्राइवेट नौकरी से घर का खर्च मुश्किल से चलता था। अनीता देवी के पास खुद की आमदनी नहीं थी, लेकिन उनके मन में हमेशा यह इच्छा थी कि वह भी कोई रोजगार करे, जिससे अपने परिवार को बेहतर जीवन दे सकें और समाज में अपनी पहचान बना सकें।

वर्ष 2022 में अनीता ने 'उजाला जीविका स्वयं सहायता समूह' से जुड़ने का निर्णय लिया, जो उनके जीवन का क्रांतिकारी परिवर्तन साबित हुआ। समूह की बैठकों ने उन्हें आत्मनिर्भर बनने, बचत और स्वरोजगार के महत्व को समझा। उन्होंने पारंपरिक कौशल को व्यवसाय का रूप देने का संकल्प लिया और पापड़–बड़ी बनाने का काम शुरू किया।

समूह से 1 लाख 20 हजार रुपये का ऋण लेकर उन्होंने अपने काम को व्यवसायिक रूप दिया। शुरुआत में सारा काम वह स्वयं करती थीं, लेकिन जब काम बढ़ा तो उन्होंने मिक्सचर और ड्रायर मशीन भी लगाई और पाँच स्थानीय महिलाओं को भी रोजगार दिया।

अब अनीता मूंग, चना, उरद दाल की बड़ी और पुदीना, मेथी, लहसुन, मिश्रित स्वाद सहित सात प्रकार के पापड़ तैयार करती हैं। उनके पापड़ की मांग बिहार के साथ–साथ दिल्ली तक है। सरस मेला, प्रगति मैदान, ज्ञान भवन और नोएडा हाट जैसे बड़े मंचों पर उन्होंने अपने उत्पादों की बिक्री की है।

आज उनकी मासिक आय 40,000 रुपये से अधिक है और वे अपने उत्पाद को एक ब्रांड बनाने की दिशा में काम कर रही हैं। अनीता देवी की कहानी इस बात का प्रमाण है कि अगर लगन हो, तो एक साधारण महिला भी देशभर में पहचान बना सकती है।

महिला उद्यमिता की मिसाल

कटिहार जिला के कोढ़ा प्रखंड की रीता देवी एक सामान्य कृषक परिवार से संबंध रखती हैं। उनका परिवार खेती कर सम्मानजनक जीवन यापन करता था। तीन बच्चों की माँ रीता देवी ने हमेशा शिक्षा को प्राथमिकता दी। उनका सबसे बड़ा बेटा बी.टेक कर मुंबई में नौकरी करने लगा।

हालांकि, महानगर की चकाचौंध में रहते हुए भी उनके बेटे का मन गाँव के लिए कुछ करने का था। इसलिए वह सबकुछ छोड़कर वापस अपने गाँव पवई लौट आया और मसाला फैक्ट्री शुरू करने की ठानी। लेकिन जब बैंक से ऋण की जरूरत पड़ी तो बैंक ने इनकार कर दिया।

बेटे के आग्रह पर रीता देवी ने पहली बार कोमल जीविका स्वयं सहायता समूह से 1,00,000 रुपये का ऋण लेकर "मौर्या मसाले" नामक मसाला यूनिट की शुरुआत की। एक कमरे से शुरू हुआ यह कारोबार मेहनत और गुणवत्ता की बदौलत धीरे–धीरे बढ़ने लगा।

समूह से लगातार संवाद और बेहतर प्रदर्शन के चलते रीता देवी को जीविका के इनोवेशन ऋण योजना से 3,00,000 रुपये का अतिरिक्त ऋण मिला, जिससे उन्होंने सरसों की तेल मिल भी शुरू की। इस बीच कटिहार जीविका महिला किसान प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड द्वारा उन्हें सरसों पेराई का बड़ा ऑर्डर मिला।

उनका शुद्ध और गुणवत्ता युक्त सरसों तेल जल्द ही बाजार में लोकप्रिय हो गया। इससे उनकी वार्षिक आय अब 8,00,000 रुपये तक पहुँच गई है। रीता देवी अपने व्यवसाय को और विस्तार देना चाहती हैं और अन्य उत्पादों को भी बाजार में लाने की योजना बना रही हैं।

रीता देवी की कहानी ग्रामीण महिला उद्यमिता और आत्मनिर्भरता की प्रेरणादायक है। आज वह जीविका की "लखपति दीदी" बन चुकी हैं और अनेक महिलाओं के लिए मार्गदर्शक हैं।

समूह से जुड़कर बदली गुड्डी कुमारी की ज़िन्दगी

नवादा जिले के नवादा सदर प्रखंड अंतर्गत भदौनी पंचायत के खरीदी विगहा गाँव की रहने वाली गुड्डी कुमारी एक ऐसी महिला हैं, जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी हिम्मत नहीं हारी और जीविका समूह से जुड़कर अपनी और अपने परिवार की ज़िन्दगी को एक नई दिशा दी। गुड्डी कुमारी अनुसूचित जाति समुदाय से आती हैं और उनके परिवार के पास न तो खुद की कोई ज़मीन थी और न ही कोई स्थायी रोजगार। परिवार में कुल छह सदस्य का जीवन मजदूरी से किसी तरह चलता था।

गुड्डी और उनके पति दोनों इंटरमीडिएट तक शिक्षित हैं। गरीबी और बेरोजगारी के कारण उनके पति काम की तलाश में मुंबई चले गए, जहाँ वह एक स्टील कंपनी में काम करने लगे। वहीं से प्राप्त वेतन से घर की ज़रूरतें किसी तरह पूरी होती थीं। लेकिन वर्ष 2006 में उन्होंने मुंबई से लौटकर गाँव में ही रहने का निर्णय लिया और घर पर बैट्री, टेलीविजन, रेडियो आदि की मरम्मत का छोटा–सा काम शुरू कर दिया।

समूह से जुड़ाव और बदलाव की शुरुआत : 10 फरवरी 2015 को गुड्डी कुमारी, आरती जीविका महिला स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। समूह में जुड़ने के साथ ही उनकी ज़िन्दगी का एक नया अध्याय शुरू हुआ। समूह की महिलाओं ने सर्वसम्मति से उन्हें समूह की अध्यक्ष बना दिया। वह हर सप्ताह की बैठक में हिस्सा लेने लगीं और 10 रुपये प्रति सप्ताह की नियमित बचत शुरू की। समूह की बैठकों से उन्हें कई प्रकार की जानकारी मिली और जीविकोपार्जन गतिविधि संचालन की सीख मिली।

कुछ ही समय बाद गुड्डी दीदी ने स्वयं सहायता समूह से 10,000 रुपये ऋण लेकर एक नई बैट्री खरीदी और उसे अपने पति की दुकान में रखकर भाड़े पर देना शुरू किया। इससे उन्हें छोटी लेकिन स्थिर आमदनी होने लगी। इस ऋण को उन्होंने समय पर ब्याज सहित चुकता कर दिया और इसके बाद उन्होंने वर्ष 2019 में समूह से 30,000 रुपये का नया ऋण लिया। इस बार उन्होंने अपने दुकान में डीश टेलीविजन का एंटीना बेचने की शुरुआत की।

व्यवसाय का विस्तार और सफलता : धीरे–धीरे गुड्डी दीदी और उनके पति ने मिलकर दुकान का आकार बड़ा किया। उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक्स सामग्री बेचने के लिए एक छोटा–सा शो रूम भी खोल लिया। इसके लिए उन्होंने समूह से 1,00,000 रुपये का ऋण लिया। गुड्डी दीदी नियमित रूप से समूह से लेन–देन करती रहीं और अपने कारोबार को विस्तार देती रहीं।

आज उनके पास लगभग 15,00,000 रुपये से अधिक की पूंजी है और मासिक आमदनी करीब 50,000 रुपये से अधिक हो गयी है। उनका परिवार अब आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर है और उनके पति को रोजगार के लिए बाहर नहीं जाना पड़ता हैं। दोनों पति–पत्नी मिलकर अपने घर पर ही कारोबार संभालते हैं।

आत्मनिर्भरता और भविष्य की योजनाएँ : गुड्डी कुमारी का जीवन आज पूरी तरह बदल चुका है। वह कहती हैं कि, "जीविका समूह से जुड़ने के बाद मेरे जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आया है। समूह से ऋण लेकर हम अपने कारोबार को लगातार बढ़ा रहे हैं। हमारे परिवार का जीवन–स्तर सुधर गया है और मेरे चारों बच्चे अब अच्छे से पढ़ाई कर रहे हैं।"

अब वह कूलर के व्यवसाय में भी निवेश करना चाहती हैं। इसके लिए वह समूह से ऋण लेकर एक नया व्यापार शुरू करने की योजना बना रही हैं। गुड्डी दीदी आज अपने गाँव की अन्य महिलाओं को बताती है कि यदि हिम्मत हो और साथ में सही दिशा मिले, तो कोई भी महिला आत्मनिर्भर बन सकती है और अपने परिवार का भविष्य संवार सकती है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार